30/10/1965 "ॐ" पिताश्री प्रातः क्लास

किसकी याद में बैठे हो? बच्चे समझते हैं मात–पिता, बापदादा (अ)भी आवेंगे। आ करके हम बच्चों को अपना वर्सा देवेंगे। बाबा से हम फिर से 5000 वर्ष पहले मुआफिक स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। यह तो हरेक की दिल में होगा ना। अभी यह नर्क है। इस नर्क रूपी भंभोर को आग लगने वाली है। तुम्हारा इस दुनिया वालों से कोई भी ताल्लुक नहीं है। तुम्हारे लिए ज्ञान भी गुप्त है। लौकिक बाप का वर्सा तो प्रत्यक्ष होता है। बाप की यह जायदाद है। आँखों से देखते हैं। बाप को भी देखते हैं और वर्से को भी देखते हैं। अभी हमारी तो आत्मा भी गुप्त है। उनको इन आँखों से नहीं देख सकते हैं। ना आत्मा को, ना प०पि०प० को देखते हैं। लौकिक संबंध में अपन को शरीर भी इन आँखों से देखते हैं और शरीर देने वाले बाप को भी देखते हैं। टीचर, गुरु को भी देखते हैं। यहाँ तो बाप, टीचर, गुरु सब हैं गुप्त। बच्चे जानते हैं हम आत्माओं को अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मि(ला) है। आगे तीसरा नेत्र नहीं था। आत्मा अंधी थी वा सोई पड़ी थी। अब आत्मा को जगाते हैं। तो आत्मा भी गुप्त है ना। जैसे आत्मा आए शरीर में प्रवेश करती है वैसे शिवबाबा भी इसमें आकर हमको फिर से स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं। बुद्धि भी कहती है बरोबर हमने अनेक बार बाप से वर्सा लिया है आधा कल्प के लिए। फिर आधा कल्प गँवा देते हैं। अब फिर से हम श्रीमत पर अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। श्रीमत देने वाला भी गुप्त है। तुम्हारी आत्मा जानती है हम प०पि०प० से गुप्त रूप में सुन रहे हैं। आत्म–अभिमानी ज़रूर बनना है। पहले आत्मा है, पीछे शरीर है। आत्मा अविनाशी है, बाप भी अविनाशी है। बाप जो शरीर लेता है वो विनाशी है। इस शरीर में आए कर बच्चे–2 भी कहते हैं और स्मृति दिलाते हैं कि मैं फिर से आया हूँ। तुमको दैवी सतयुगी स्वराज्य पाने लिए पुरुषार्थ कराते हैं। पुरुषार्थ भी पूरा करना है। यह भी जानते हो सतयुग में सिर्फ तुम्हारा ही राज्य होगा। तुम राज्य करते थे। फिर पुनर्जन्म तो लेना ही होता है। जो कृष्ण की वंशावली अथवा दैवी कुल का था वो ही फिर रहेगा। दूसरा कोई (कुल) नहीं होगा। चंद्रवंशी कुल भी नहीं होगा। यह तो बहुत सहज बातें हैं समझने की। बरोबर सतयुग में कोई धर्म ना था। अभी तो ढेर के ढेर धर्म हैं। आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। अनेक तालियाँ बजती रहती हैं। सतयुग में तो एक धर्म है तो ताली बजती नहीं। तो तुम बच्चे जानते हो हम गुप्त ही अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। हरेक कहेंगे हम अपने राज्य में ऊँच पद पाने पुरुषार्थ कर रहे हैं। तो इतनी बहादुरी भी चाहिए। तुम्हारा नाम ही है शिव शक्तियाँ। शेर पर सवारी कोई होती नहीं है। यह महिमा दिखाई है, इसलिए शक्तियों को शेर पर बिठाते हैं। तुम कोई शेर पर नहीं बैठती हो, तुम तो माया पर जीत पाने वाली हो। यह पहलवानी दिखाती हो; इसलिए तुम्हारा नाम शिव शक्ति शेरनी सेना रखा है। यूँ तो गोप भी हैं; परन्तु मैजॉरिटी माताओं की हैं। अपवित्र प्रवृत्तिमार्ग से पवित्र प्रवृत्तिमार्ग में तुम ले जाती हो। तुम जानते हो सतयुग विष्णुपुरी में हम बहुत सुखी थे। पवित्रता, सुख–शांति सब था। यहाँ तो कितना दुख है। घर में बच्चे कपूत होते हैं तो कितना रोना–पीटना होता है। बाल–बच्चे भी कितना तंग करते हैं। वहाँ तो सदैव हर्षित रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो, बेहद का बाप हमको फिर से बेहद का वर्सा देने आए हैं। बाप कहते हैं भल तुम घर–गृहस्थ में रहो, सिर्फ बुद्धि में यह धारण करो। यह पढ़ाई बुद्धि की है। घर में रहते पढ़ते रहो। श्रीमत पर चलो। खान–पान आदि में भी कुछ ना कुछ असर तो लग जाता है ना। इसलिए युक्ति से चलना है। हरेक का कर्मबन्धन अपना–2 है। कोई बाँधेली हैं, कोई बंधन मुक्त हैं, कोई तो चतुराई से भूँ–2 कर छुट्टी भी ले लेती हैं। युक्तियाँ तो बहुत समझाई है। हमको रात को कृष्ण का सा० हुआ। उसने कहा है पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनोगे अथवा बाप का फरमान है पवित्र बनो। मैं भक्ति का फल देने आया हूँ। तो ज़रूर भगवान की मत पर हमको चलना पड़े ना। तब ही बिगर सज़ाए खाए हम मुक्ति–जीवनमुक्ति को पावेंगे। जन्म–जन्मांतर का बोझा तो सिर पर है ना। जैसे बाप सेकण्ड में मुक्ति देते हैं वैसे सज़ाए भी एक सेकण्ड में मिल जाती हैं; परन्तु भोगना बहुत होती है। काशी कलवट खाती हैं। तो उसी थोड़े समय में सब सज़ाए खाते हैं। हिसाब–किताब चुक्तू हो जाता है।

तुमको तो बिगर सज़ा खाने हिसाब–किताब चुक्तू करना है। इसलिए जितना हो सके ऐसा पुरुषार्थ करना चाहिए, जो हमको सज़ा ना खानी पड़े धर्मराजपुरी में। बाप को याद करना तो अच्छा ही है। विनाश का समय भी सामने खड़ा है। विनाश काले पांडवों की है प्रीत बुद्धि। यह तो गाया हुआ है। बाप ने सन्मुख आय प्रीत रखाई है। बाकी औरों से प्रीत रख क्या करेंगे! वो तो सब खलास हो जावेंगे। इस एक बाप को ही याद करते हैं। यह हड्डी पुरुषार्थ कर(ता) है। बाहर से करके निमित मात्र मित्र–संबंधियों आदि से खुश खैराफत आदि पूछते हैं। दिल वहाँ बाप के पास लगी हुई है। जिस्मानी आशुक–माशुक अपने–2 घर में रहते एक/दो को याद करते हैं। तुम अब आशुक बने हो शिवबाबा के। शिवबाबा तो सन्मुख है। वो तुमको याद करते हैं, तुम उनको याद करते हो। शिवबाबा खुद इस शरीर में आकर आत्माओं की सगाई परमात्मा से कराते हैं। इसको कहा जाता है आत्माओं का प०पि०प० के साथ कल्याणकारी मेला। तुम (ज्ञान गंगाएँ हो ना)। ज्ञान सागर है बाप। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। यह याद ही घड़ी–2 भूल जाती है। और कोई तकलीफ नहीं है। सिर्फ पवित्र रहना है। बोलो, स्वप्न में कृष्ण भगवान कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम कृष्णपुरी के मालिक बनोगे, फिर हमको वैकुण्ठ की राजाई लेने क्यों तंग करते हो? तुमको विकार चाहिए तो भल दूसरी को ले आए सकते हो। हम दोनों की सेवा करेंगे; परन्तु विख नहीं देंगे। इसमें देह–अभिमान ना आना चाहिए कि ..... आकर बैठी है। हम... नौकरानी बन जाएगी। अरे, अपवित्र बनने से तो नौकरी करना अच्छा है। आपे ही उनको तरस पड़ेगा कि यह तो वण्डर है। आपे ही अपने घर की राजाई दूसरी को दी और खुद बर्तन आदि माँजती है। बाप का फरमान है पवित्र बनो तो 21 जन्म राजाई पावेंगे। तो इसके लिए बर्तन माँजने पड़े तो क्या है! देह अभिमान ना टूटने कारण ही अपने वर्से को गँवाते हैं। तिरया चरित्र भी होता है। मैं पाँव में पड़ती हूँ, मुझे रोज़ स्वप्न आते हैं अपवित्र ना ब(नो); इसलिए मैं यह विख ना (दूँगी)। (मुझे) भल अपनी दासी समझ लो। दासी से कब विकार करते हैं क्या? मैं तो कहता हूँ निर्विकारी बनो। नहीं तो भल दूसरी रखो। (फिर) निभाना होता है। बाप कितना बड़ा है। पतित दुनिया, पतित शरीर में आया है। नहीं तो शिवबाबा को सोमनाथ मंदिर में पूज रहे हैं। इस समय देखो क्या कर रहे हैं। कितना साधारण बैठे हैं! अब भगवान खुद शिक्षा दे रहे हैं, इस पर भी ना चलेंगे तो पद पर लकीर लगा देंगे। बाप कहते हैं– बच्चे, पवित्र बनो। यह तो अच्छा है ना। अभी तो सब भ्रष्टाचारी हैं। श्रेष्टाचारी उनको कहा जाता है जो पवित्र रहते हैं। जो अपवित्र रहते उनको भ्रष्टाचारी कहा जाता है। गवर्मेन्ट ने सन्यासियों का झुण्ड बनाया है कि तुम श्रेष्टाचारी बनाओ; परन्तु श्रेष्टाचारी तो होने ही सतयुग में हैं। यहाँ कोई हो ना सके। पवित्र ही श्रेष्ठ कहे जाते हैं। सन्यासी पवित्र हैं; परन्तु वो फिर भी अपवित्र से जन्म लेते हैं; क्योंकि है ही माया का राज्य। योगबल से जन्म तो लेते नहीं हैं। बाप बच्चों को समझाते हैं हमेशा दिल साफ रहनी चाहिए। ज़रा भी अहंकार ना रहे। बिल्कुल गरीब बन जाना है। (सेठानी) से गरीब बन जाना है, अगर ऐसी विख के लिए तकलीफ होती है तो। बाप तो गरीब निवाज़ ही है। वाह गरीबी! गरीबों को ही तो साहुकार बनाना है। बाप कहते हैं भारत को गरीब से आकर साहुकार बनाता हूँ। भारतवासी ही बनेंगे ना और बनेंगे (वो) जो श्रीमत पर चलेंगे। वो ही स्वर्ग के मालिक बनेंगे। बाप सहज राजयोग सिखलाते ही हैं कृष्णपुरी अथवा स्वर्ग का मालिक बनाने। बाप का फरमान है पवित्र बनो। हम और कोई मनुष्य मात्र को गुरु मानते नहीं। जास्ती खिटपिट होती ही है पवित्रता पर। किसको मार मिलेगी, घर से निकाल देंगे तो क्या करेंगे। बाप इनको शरण देते हैं; परन्तु ऐसे भी नहीं बाबा पास आए फिर संबंधी याद पड़े और नुकसान करते रहे। फिर दोनों जहान से निकल जाती हैं। ज्ञान की धारणा नहीं करते तो सुधरते नहीं। पुराने ख्याल ही चलते रहते। यहाँ तो कोई भी पाप ना करना चाहिए। तुमको पुण्य आत्मा बनना है। श्रीमत से पूछो यह पाप है वा पुण्य है? बाबा समझाते हैं जो भी पाप किए हैं वो बाप को सुनाने से आधा मिट जावेंगे। बहुत बच्चे बतलाते हैं हमने यह–2 किया है, यह गुनाह किए हैं, फलानी से पतित बने। बाप तो

जानते हैं ना। कितने विकर्म करते हैं। समझाते हैं अभी कोई पाप ना करो, नहीं तो सज़ा एकदम सौणी हो जावेगी। फिर धर्मराजपुरी में सा० करावेंगे, तुम ऐसे–2 पाप छिपाते थे। छिप तो नहीं सकता। भल यह नहीं देखते हैं। वो बाबा तो अच्छी रीति जानते हैं ना। धर्मराज के पास सारा खाता रहता है। ईश्वर की कारोबार बड़ी वण्डरफुल, गुप्त है। कहते हैं ना ज़रूर (पाप) किया है तब दूसरे घर में छी–2 जन्म मिला है। तो ज़रूर ..... और जमा होता है ना। ऊपर में खाता तो है ना। अभी वो खाता यहाँ है। इसलिए बाप समझाते रहते हैं कब कोई पाप ना करना। कख का चोर सो लख का चोर कहा जाता है। समझना चाहिए हम बहुत बड़ा पाप करते हैं। फिर पद भ्रष्ट हो जावेंगे। धारणा नहीं होती तो ईश्वरीय सर्विस कर नहीं सकते। औरों का भी कल्याण करना है। अगर ऐसे ही समय बरबाद करेंगे, पाप करते रहेंगे तो पद भी कम हो पड़ेगा। फिर कल्प–कल्पांतर का वो हो जावेगा। इसलिए जितना हो सके पुरुषार्थ करना है। पूछते हैं बाबा पास क्यों (आए हो)? तो कहते हैं सूर्यवंशी राजधानी का वर्सा लेने। तो श्रीमत पर ज़रूर चलना पड़े। देखना है मेरे से कोई बुरा काम वा पाप तो नहीं होता है। नहीं तो सौणा बन जाएगा। फिर दास–दासी जाकर बनेंगे। क्या यह इसलिए आए हो? मम्मा–बाबा कहते हो तो नर से नारायण बनना चाहिए। बिगर धारणा पद कैसे पावेंगे? मम्मा–बाबा कहते भी माँ–बाप के तख्त पर ना बैठना तो समझेंगे पूरा पढ़ते ना हैं। मम्मा–बाबा तो नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हैं ना। तुमको भी बाप वो ही पढ़ाते हैं। फर्क नहीं है। तो बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए। बहुत हैं जो छिप–2 कर पाप करते रहते हैं। बतलाते नहीं। कितना भी समझाओ फिर भी छोड़ते नहीं। चोर को आदत पड़ जाती है तो चोरी बिगर वा झूठ बोलने बिगर रह नहीं सकते। सच्चे बाबा से सदैव सच बोलना चाहिए। बाप को बतलाना चाहिए हमसे यह पाप हुआ। क्षमा करना। माया ने पाप कराय लिया। कहेंगे, अच्छा फिर भी सच बोला है तो माफ हो सकता है। नहीं तो पाप बढ़ता ही जावेगा। कोई कहते हैं धंधे में पाप होता है। व्यापारी लोग पाप करते हैं तो फिर .....। (पाप) कर फिर पुण्य में पैसा लगा दिया ना भी अच्छा ही है। डूबी बेड़ी से लोटा निकले वह भी अच्छा है। यह बाप तो स्वर्ग की स्थापना करते हैं। यहाँ तो सब पुण्य में ही चला जावेगा। दान–पुण्य करने वाले को मिलता है ना। बाप हरेक को समझाते हैं। साहुकार को भल लूटो। गरीब को नहीं। वो तो है ही गरीब। बाप हर बात में मत देते हैं। सबका बेड़ा गर्क तो होना ही है। तो बच्चों को कब ऐसा काम ना करना चाहिए; परन्तु माया छोड़ती नहीं है। अच्छी–2 चीज़ देखते हैं तो झट खाए लेंगे वा कोई चीज़ उठा लेंगे। ऐसे–2 पाप करने से अपना पद भ्रष्ट कर देते हैं। कई बच्चे तो बाबा–2 कहकर भी अपना हाथ छोड़ देते हैं। हाथ छोड़ा तो क्या हाल होगा। माया एकदम कच्चा खा लेती है। फिर वो कौड़ी का भी नहीं रहता; जैसे भील। नम्बरवार तो होते ही हैं ना। सुखधाम में कोई तो राजाई करते हैं। कोई साधारण भी होंगे। दास–दासियाँ भी होंगे ना। प्रजा आदि सब चाहिए ना।

अभी तुम बच्चों को बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा मिल रहा है। इसलिए बाप की मत पर पूरा वर्सा लो। मौत सामने खड़ा है। अकाले मृत्यु तो हो जाता है ना। एरोप्लैन गिरा सब मर गए। मालूम था क्या कि यह होगा। मौत तो सिर पर खड़ा है। इसलिए कोशिश कर बाप से वर्सा पूरा लेना चाहिए श्रीमत पर। शरीर निर्वाह अर्थ तो भल करो। साथ–2 यह भी पढ़ाई पढ़ो। बाप युक्तियाँ तो सब बतलाते हैं। पुरुषार्थ कर पवित्र भी रहना है। झाड़ू लगाना, बर्तन माँजना अच्छा है अपवित्र बनने से। देही–अभिमानी बनना पड़े। पवित्रता का तो मान है ना। पवित्र ना बनेंगे तो पद भी नहीं पावेंगे।

यह सब बच्चों को समझानी दी जाती है। बच्चे वृद्धि को पाते रहेंगे। प्रजा तो बहुत बनती है। एक राजा को प्रजा तो हज़ारों के अंदाज में होगी ना। राजा बनने में मेहनत है। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ऊँ।